DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

अव्यय

LIVE 02-04-2024 09:00 AM

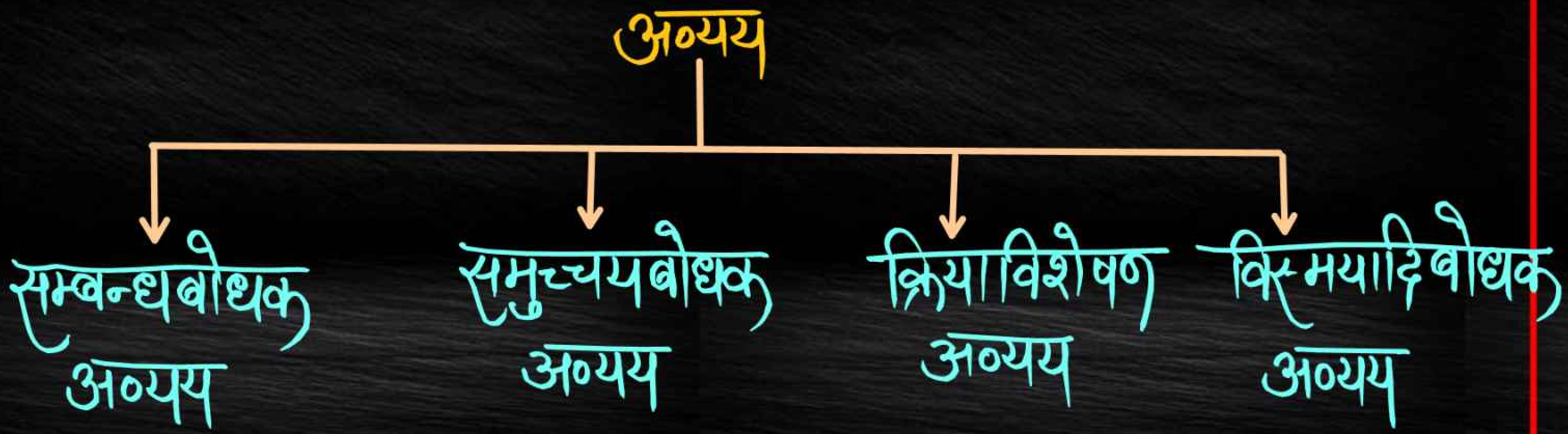
अव्यय
सम्बन्धबोधक अव्यय
समुच्चयबोधक अव्यय
क्रियाविशेषण अव्यय
विस्मयादिबोधक अव्यय

परिभाषा- ऐसे शब्द जिसमें लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नही होता उसे अव्यय कहते हैं।

यह अविकारी होता है।

जैसे- आज, कल, सामने, आगे, और, अचानक, हाय!

अव्यय के चार भेद होते हैं-

1. **सम्बन्धबोधक अव्यय** – वह अविकारी शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य में अन्य संज्ञा या सर्वनाम के साथ सम्बन्ध का बोध कराते हैं उन्हें सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे – के साथ, के सामने, के चारो ओर, के निकट, के भीतर, के पीछे, के ओर, के आगे, के पहले इत्यादि आते है –

- विद्यालय के सामने बगीचा है।
- सुनील के भरोसे यह काम बिगड़ गया।
- विद्या के बिना मनुष्य पशु है।
- मनुष्य पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता।
- इसी जंगल के पीछे नदी बहती है।

- मोहन, अजय के साथ दिल्ली गया।
- मैंने घर के सामने कुछ पेड़ लगाए है।
- बच्चे पिताजी के साथ मेला गये है।
- मैं हास्टल से दूर पहुँच गया था।
- तुम घर के भीतर जाओ।
- इस मकान के पीछे धर्मशाला है।

अर्थ के आधार पर सम्बन्ध बोधक अव्यय के 13 भेद होते है।

1. काल वाचक – पहले, बाद, आगे, पीछे
2. स्थान वाचक – बाहर, भीतर, बीच, ऊपर, नीचे, तले, नजदीक
3. दिशा वाचक – निकट, पास, समीप, ओर, तरफ, सामने
4. साधन वाचक – जरिये, सहारे, द्वारा, निमित्त, मार्फत, माध्यम
5. विरोध वाचक – उलटे, विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत
6. व्यतिरेक वाचक – सिवा, बिना, अलावा, बगैर, अतिरिक्त
7. उद्देश्य या हेतु वाचक – वास्ते, हेतु, लिए

8. **साहचर्य वाचक** – समेत, संग, साथ, सहित, पूर्वक, स्वाधीन
9. **विषय वाचक** – विषय, बाबत, लेख, निस्बत
10. **संग्रह वाचक** – समेत, भर, तक
11. **विनिमय वाचक** – पलटे, बदले, जगह, एवज
12. **सादृश्य वाचक** – समान, तरह, भाँति, तुल्य, सदृश, जैसा
13. **तुलना वाचक** – अपेक्षा, बनिस्बत, सामने

2. **समुच्चय बोधक अव्यय** – जो शब्द वाक्य तथा शब्दों को जोड़ते हैं। उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

समुच्चय बोधक अव्यय दो प्रकार के होते है –

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक - चार उपभेद है

i. संयोजक – और, एवं, तथा

ii. विभाजक – या, अथवा, नहीं तो, व

iii. विरोध दर्शक – पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, वरन्

iv. परिणाम दर्शक – इसलिए, अत:, अतएव

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक – चार उपभेद है

i. कारण वाचक – क्योंकि, चूँकि, इसलिए

ii. उद्देश्य वाचक – कि, जोकि, ताकि

iii. संकेत वाचक – जो, सो, यदि....तो,

iv. स्वरूप वाचक – अर्थात, यानी

- **जैसे -** मोहन **और** अजय भाई है।
- उसने बहुत समझाया **लेकिन** किसी ने उसकी बात नहीं मानी।
- मुझे टेपरिकार्डर **या** घड़ी चाहिए।
- सूरज निकला **और** पक्षी बोलने लगे।
- राम ने खाना खाया **और** सो गया।
- मैं चाहता हूँ **कि** भारत तरक्की करे।
- जल्दी चलो **नहीं तो** पकड़े जाओगे।

- नेहा खड़ी थी **और** सुमित्रा बैठी थी।
- वह बीमार है **इसलिए** स्कूल नही आया।
- मोहन मुंबई गया **तथा** रवि दिल्ली गया।
- नेहा पढ़ने में तो तेज है **परन्तु** शरीर से कमजोर है।
- नित्य आराम करो **ताकि** स्वस्थ रहो।

अध्याय

3. क्रिया विशेषण - जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं -

जिन क्रिया विशेषण शब्दों द्वारा क्रिया होने के समय का बोध हो।

i. कालवाचक क्रियाविशेषण – (कब लगाकर)

जैसे- परसों आंधी आएगी।

मुकुल कल मेरे घर आया था।

मैंने दोपहर खाना खाया था।

मैं सुबह को दौड़ता हूँ।

हम अक्सर शाम को खेलने जाते है।

(क) **समय बोधक** – आज, कल, परसों, नरसों, कब, तब, जब, अब, सवेरे, पीछे, पहले, कभी, जभी, तभी, फिर आदि

(ख) **अवधि बोधक** – निरन्तर, कभी न कभी, लगातार, दिनभर, सतत, आजकल, नित्य, आदि।

(ग) **पौनः पुन्य बोधक या आवृत्ति बोधक** – कईबार, घड़ी-घड़ी, बार-बार, हर-रोज आदि।

जिन शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का बोध होता है।

ii. स्थानवाचक क्रियाविशेषण – (कहाँ लगाकर)

जैसे – मैं बाहर जा रहा हूँ।

तुम अन्दर जाकर खाओ।

तुम अपने दाहिनें ओर गाड़ी घुमा लो।

दरभंगा से शान सांसद का चुनाव जीत गया।

(क)दिशा बोधक – दाहिनें, बायें, हर तरफ, किधर, इधर, उधर आदि

(ख) स्थिति बोधक – सर्वत्र, पास, निकट, समीप, सामने, साथ, भीतर, बाहर नीचे, ऊपर, आगे, पीछे, यहाँ, जहाँ, तहाँ आदि।

जिन शब्दों द्वारा क्रिया के नापतौल या परिमाण का बोध हो

iii. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण – (कितना लगाकर)

जैसे- तुम थोड़ा अधिक दौड़ो।

कोकिला अधिक कसरत करती है।

बूँद-बूँद से ही सागर बना।

यह कपड़ा काफी लंबा है।

(क) पर्याप्ति बोधक – बस, केवल, काफी, चाहे, यथेष्ट, ठीक आदि

(ख) तुलना बोधक – अधिक, कम, कितना, जितना, इतना आदि

(ग) क्रम बोधक – क्रम से, यथा-क्रम, थोड़ा-थोड़ा, तिल-तिल, एक-एक करके आदि।

(घ) आधिक्य बोधक – खूब, बिल्कुल, भारी, बहुत, अत्यन्त, अति, निरा, पूर्णतया आदि।

(ङ) न्यूनता बोधक – किंचित, जरा, थोड़ा, कुछ, लगभग, प्राय: आदि

जिन शब्दों द्वारा क्रिया के होने की रीति या विधि का बोध हो

iv. रीतिवाचक क्रियाविशेषण – (कैसे लगाकर)

जैसे – अचानक काले बादल घिर आए।

मुकुल ध्यान से चलता है।

अनुज हमेशा सच बोलता है।

वह फटाफट पीता है।

घोंघा धीरे-धीरे आगे बढ़ता है।

कारण बोधक, निषेध बोधक, निश्चय बोधक, प्रश्न बोधक, आकस्मिकता बोधक, स्वीकार बोधक, अनिश्चय बोधक

नोट – जल्दी-जल्दी, सम्भव है, धीरे-धीरे, धड़ाधड़, ठीक, सचमुच, झटपट, आप ही आप, ध्यानपूर्वक, अचानक, सहसा, सचमुच, अवश्य, कदापि नहीं, नि:सन्देह, बेशक, यथासम्भव, शायद, अनायास, सहसा, मानो, परस्पर, साक्षात, इत्यादि।

* प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण - 3 (अव्यय)

(i) - साधारण

(ii) - संयोजक

(iii) - अनुबद्ध

* रूप के आधार पर क्रिया विशेषण - 3 (अव्यय)

(i) - मूल

(ii) - यौगिक

(iii) - स्थानीय

4. विस्मयादिबोधक अव्यय – जिन शब्दों द्वारा हर्ष, शोक, घृणा आश्चर्य आदि का बोध हो उसे विस्मयादिबोधक अव्यय कहते है।

- **अरे !** चले जाओ नही तो मार खाओगे।
- **हाय !** वह चल बसा।
- **वाह !** रवि ने तो कमाल ही कर दिया।
- **हे राम !** मोहन के साथ यह क्या हो गया।
- **जी हां !** मैं हूँ खलनायक
- **छिः !** कितनी गन्दगी है।
- **अजी !** सुनती हो ।

1. शोक बोधक
2. तिरस्कार बोधक
3. स्वीकृति बोधक
4. विवशता / आश्चर्य बोधक
5. संबोधन बोधक
6. हर्ष बोधक
7. अनुमोदन / आशीर्वाद बोधक
8. विदास बोधक
9. विवशता बोधक

- **निपात** – मूलतः निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द या पूरे वाक्य को श्रव्य भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात का कार्य शब्द समूह को बल प्रदान करना भी है।

जैसे – मोहन ने ही श्याम को मारा था।

- आपको चलना ही पड़ेगा।
- रवि भी आपके ही साथ चलेगा।
- राम ही मेरे प्रिय भगवान है।
- राम के साथ श्याम भी जायेगा।

- चावल के साथ दाल **भी** आवश्यक है।
- वह शाम **तक** आएगा।
- दिल्ली **तक** मेरी पहुँच है।
- वह दसवीं **तक** पढ़ा हुआ है।
- **केवल** तुम्हारे आने से काम न चलेगा।